an>

Title: Need to protect and develop historical site related to epic Mahabharat hero 'Karna' in Champa in Bihar.

श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर) : महोदय, बिहार के रेशमी शहर भागलपुर नगर स्थित चम्पानगर, नाथनगर जो इतिहास में चम्पा अंगदेश की प्राचीन राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है। जहां महाभारतकालीन अप्रतिम योद्धा कुंती पुत्र अंगराज दानवीर कर्ण के नाम से प्रसिद्ध कर्णगढ़ किला स्थित है। जिसकी प्राचीनता के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार फ्रांसिस बुकानन एवं चीनी यात्री ह्वेन-सांग ने भी अपने यात्रा संस्मरणों में वर्णन किया है। इसी कर्णगढ़ की पुरातात्विकता का सच टटोलने हेतु सन् 1970 में पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बी.पी. सिन्हा की देखरेख में कर्णगढ़ के एक छोर पर आंशिक रूप से खुदाई की गयी, जिसमें कई महत्वपूर्ण पुरावशेष प्राप्त हुए। किन्तु बाद में अर्थाभाव के कारण खुदाई रोक दी गयी, जो दोबारा शुरू नहीं की गयी। खुदाई में मिले सुरक्षा मीनार के अवशेष, प्रवेश द्वारा, ठीक इससे सटे हथियार घर, अनेक प्राचीन सामग्रियां, बर्तन, चूड़ियां, टेराकोटा और हाथीदांत की बनी वे नारी प्रतिमाएं हैं, जिनकी पहचान पुराविदों ने चम्पा की मातृदेवी के रूप में की है और जिसकी प्रामाणिक व्याख्या डॉ. रामचन्द्र प्रसाद ने अपनी शोध पुस्तक आर्कियोलॉजी ऑफ चम्पा एंड विक्रमशिला में की है और जिसे आदिशक्ति का आदिरूप बताया गया है। अपने शीष के चारों और आठ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित यही कल्पना बाद में देवी दुर्गा के आधुनिक अष्टभुजा रूप में साकार हुई। यदि विस्तृत और सम्पूर्ण खुदाई होती तो कर्णगढ़ के गर्भ से निश्चित तौर पर महाभारतकालीन सभ्यता के ध्वंसावशेष बाहर आ जाते और तब देश अपने अतीत पर गौरवान्वित होता और दुनिया विस्फारित नेत्रों से उस सच को देखने दौड़ पड़ती। लेकिन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ऐस चुप बैठा है, मानो उसे इसकी कोई जानकारी न हो।

अतः केन्द्र सरकार इस एतिहासिक कर्णगढ़ की अविलंब सुध ले और सर्वेक्षण कराकर विस्तृत चतुर्दिक खुदाई का निर्देश ए.एस.आई. को देकर विरासत संरक्षण का ठोस प्रबंध करे, जिससे विश्वभर में इसे राष्ट्रीय धरोहर के रूप में पुनः स्थापित किया जा सके। साथ ही दानवीर कर्ण की स्मृति में कर्मगढ़ पर एक लंबा कर्ण स्तूप जो देश दुनिया के लिए अनूठा हो, स्थापित किया जाए तथा वर्तमान सी.टी.एस. मैदान से सटे दक्षिणी छोर पर स्थानीय लोगों/पर्यटकों के लिए एक पार्क की भी व्यवस्था की जाए।